बलरामजी ने जब विशालकाय वानर द्वीत को अपनी एक ही मुक्के से मार दिया था तो उन्हें अपने बल पर घमंड हो चला था । तब श्रीकृष्‍ण के आदेश पर हनुमानजी द्वारिका की वाटिका में घुस गए और वहां फल खाकर उत्पात मचाने लगे । यह सुनकर बलरामजी खुद उन्हें एक साधारण वानर समझकर अपनी गदा लेकर वाटिका से भगाने के लिए पहुंच गए । वहां उनका हनुमानजी से गदा युद्ध हुआ और वे हांफने लगे तब उन्होंने कहा कि सच कहो वानर तुम कौन हो तब वहां श्रीकृष्ण और रुक्मिणी प्रकट होकर बताते हैं कि ये पवनपुत्र हनुमानजी हैं ।